

The Illuminating Blueprint

नवयुग की वास्तुकला: इक्कीसवीं सदी का उज्ज्वल भविष्य (Chapters 21-24)

विज्ञान, अध्यात्म और मानव पुरुषार्थ का प्रामाणिक ब्लूप्रिंट



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

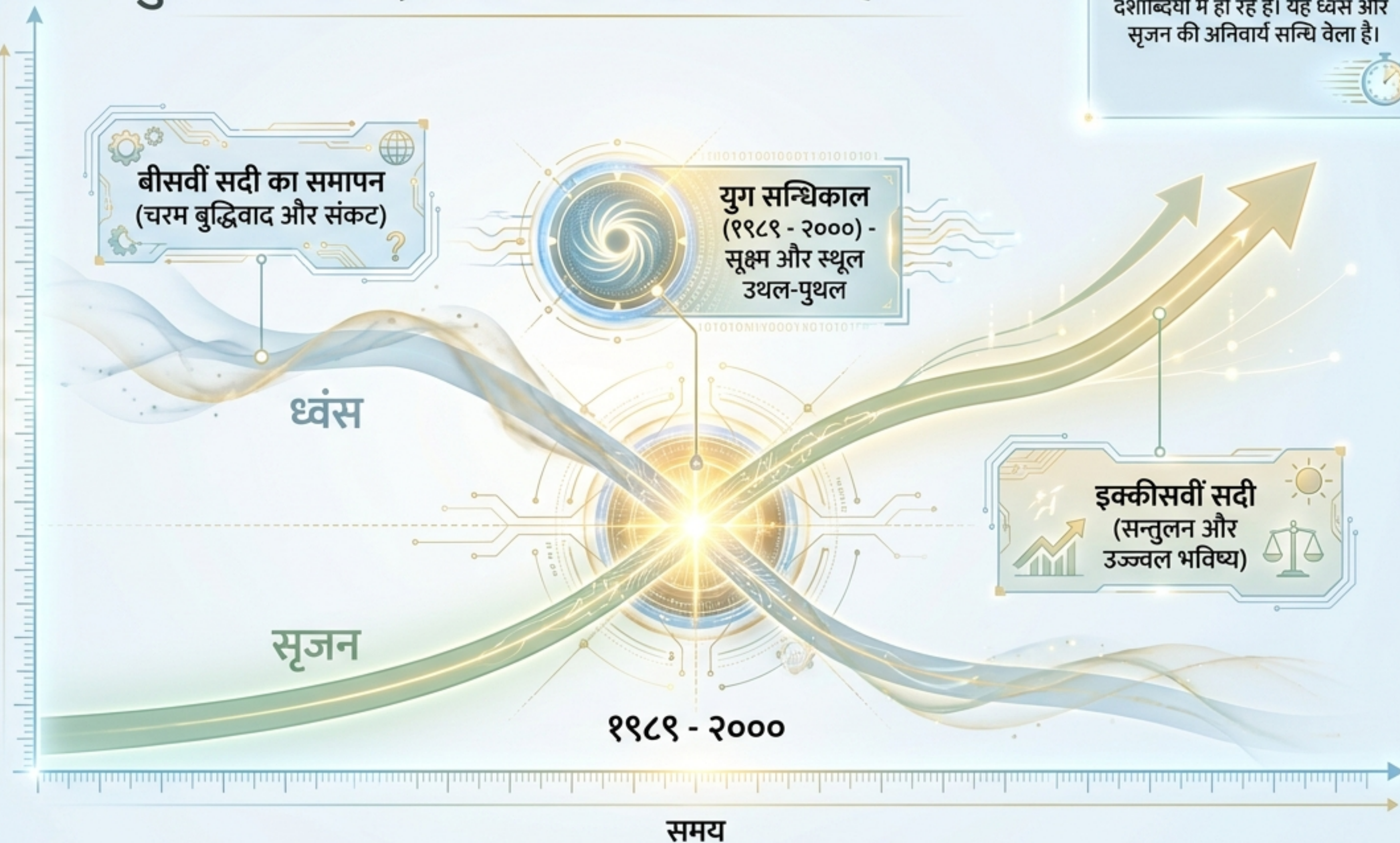
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से लें कि मेरे ज्ञान शरीर को – सब बच्चों से कहियेगा में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करे। रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगञ्जयि देवमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



वैश्विक परिवर्तन



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

धर्मग्रन्थों का वैश्विक साक्ष्य: एक सर्वसम्मत पूर्वाभास

	श्रीमद्भागवत (हिन्दू)	बाइबिल (ईसाई)	कुरान (इस्लाम)
Transition Period/ Crisis	» कलियुग का अन्त और निष्कलंक सत्ता का अवतरण	१९८०-२००० के बीच प्राकृतिक/मानवी उथल-पुथल (सेवन टाइम्स)	१४वीं सदी (हिजरी) में कयामत के बाद विश्वव्यापी दिव्य प्रकाश
Ultimate Outcome	सात्विकता और समता का युग	स्वर्णिम युग की स्थापना	विज्ञान और धर्म का अद्भुत समन्वय (महामानवों का प्रादुर्भाव)

दृश्य और अदृश्य शक्तियों का सन्तुलन

अदृश्य शक्ति:
महाकाल की
युग प्रत्यावर्तन प्रेरणा
(ईश्वरीय इच्छा)

परिवर्तन के लिए प्रत्यक्ष पुरुषार्थ के
साथ अदृश्य संकल्प, साहस और
दूरदर्शी कौशल भी जुड़ा होना चाहिए।

लोक मंगलकारी
परिणाम

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर
को मेरे क्रान्तिधर्म साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

अन्तःस्फुरणा
द्वारा अवतरण

दृश्य पुरुषार्थ:
मानवी संकल्प
और सामूहिक प्रयास
(भगीरथ, दधीचि, ग्वाल-बाल की तरह)

चेतना की गंगोत्री: शान्तिकुञ्ज का वैज्ञानिक और आध्यात्मिक चयन

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दगी

भौगोलिक ऊर्जा:
हिमालय की छाया और गंगा की गोद

ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच

सप बचसे कहियेगा —

मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधारा

जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करूँगा

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

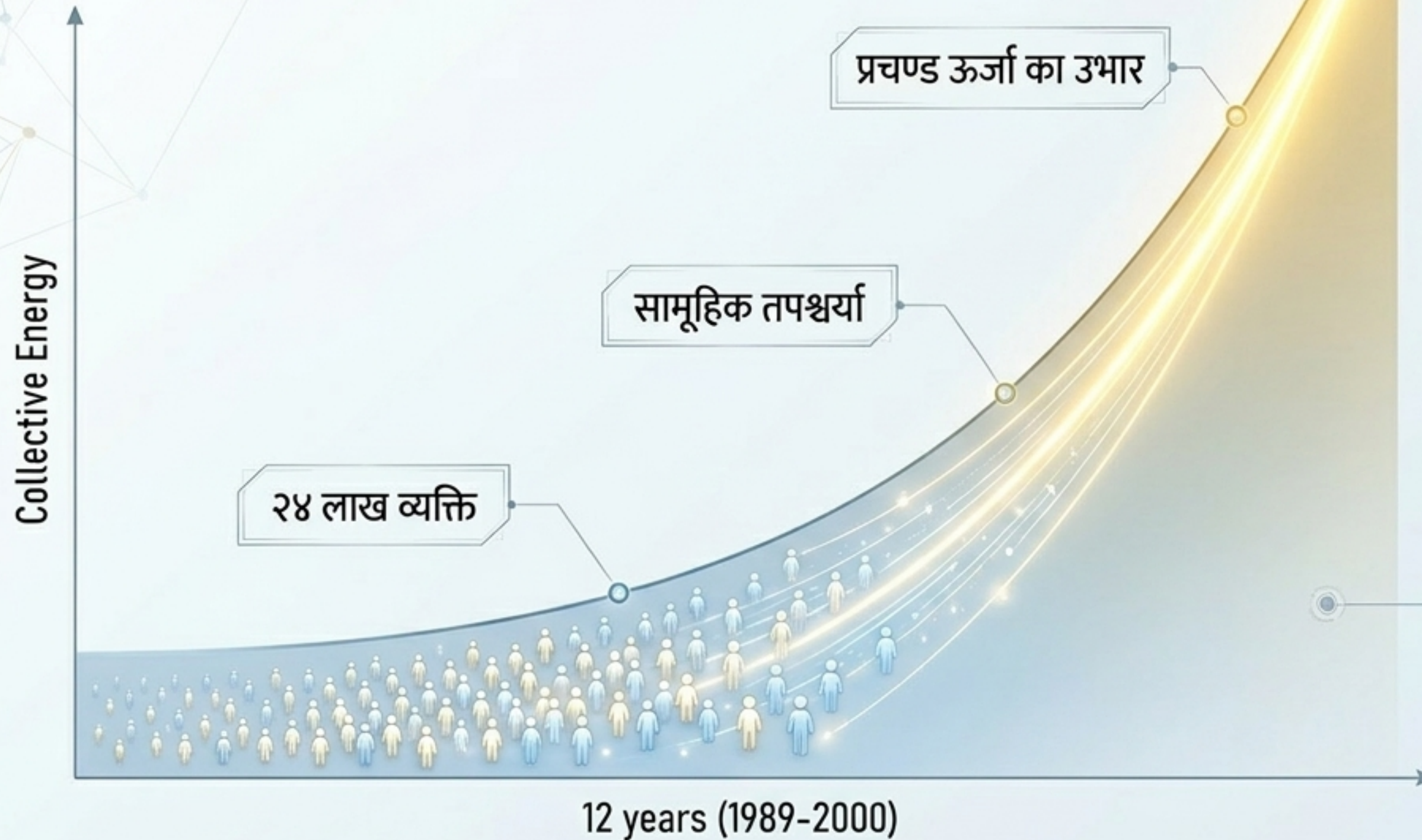
शान्तिकुञ्ज को सूक्ष्म परीक्षणों के उपरान्त
चुना गया। यहाँ से उठी विचार तरंगें (गंगोत्री की
तरह) विश्व भर में सहस्र धाराओं में बँट रही हैं।

निरन्तरता:
अखण्ड दीप और अनवरत साधना

आध्यात्मिक ऊर्जा:
सप्त ऋषियों की तपोभूमि

हादिद्वार

युगसन्धि महापुरश्चरणः सामूहिक ऊर्जा का विज्ञान



वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर
को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

जैसे कई व्यक्ति मिलकर भारी
वजन धकेलते हैं, वैसे ही इस तपश्चर्या
से उत्पन्न ऊर्जा विशालकाय
सामूहिक प्रयत्नों को सफल बनाती है।

विचारक्रान्ति का आदर्श मॉडल (आनुपातिक ब्लूप्रिंट)

भव्य भवन बनाने से पहले छोटे मॉडल खड़े किये जाते हैं। शान्तिकुञ्ज उसी नवयुग का जीवंत, व्यावहारिक मॉडल है।

स्तंभ १: लेखनी -
महाप्रज्ञा की पक्षधर लेखनी जो जनमानस को झकझोरे।

स्तंभ २: वाणी -
परिमार्जित वाणी जो उल्टे को सीधा करे।

स्तंभ ३: प्रामाणिक तंत्र -
प्रतिभा और प्रखरता के धनी अग्रदूतों का परिकर।



प्रथम स्तंभ: लेखनी की क्रान्तिकारी शक्ति

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगक्रषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

२५००+ पुस्तकें

‘अखण्ड ज्योति’
(५०० से ३ लाख+ प्रतियाँ)

‘युग निर्माण योजना’
(७० हजार)

‘युग शक्ति गुजराती’
(१.५ लाख)

इनपुट:

प्रक्रिया (नो प्रॉफिट-नो लॉस):

बिना विज्ञापन, विशुद्ध जन-सहयोग।

‘झोला पुस्तकालय’ मॉडल — घर-घर वितरण।

आउटपुट:
हर माह
५० लाख+ पाठकों
की विचार चेतना
का नवनिर्माण।

द्वितीय स्तंभ: परिमार्जित वाणी और प्रशिक्षण तंत्र

चरण १: प्रवेश
सामान्य नागरिक का
आगमन।



चरण २: प्रशिक्षण

१-माह का 'युग शिल्पी' सत्र (प्रचारक स्तर) या ९-दिन का 'संजीवनी विद्या' सत्र (जीवन साधना)।



चरण ३: उपकरण

सुगम संगीत, वाद्ययंत्र,
स्लाइड/वीडियो, दीपयज्ञ विधि।



चरण ४: परिणाम

५ लाख+ प्रशिक्षित।
३५००+ स्थाई प्रचारक प्रतिवर्ष विनिर्मित।

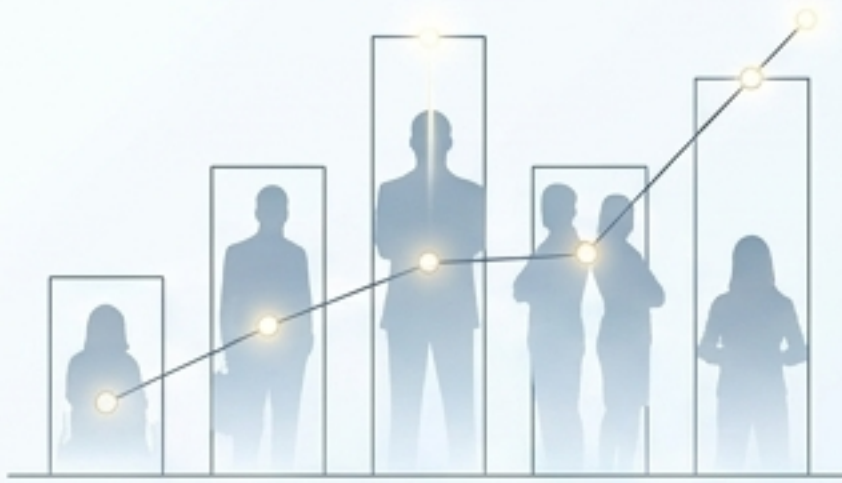


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

तृतीय स्तंभ: प्रामाणिक पुरोधाओं का समर्पित परिकर

Human Capital Dashboard

मानव संसाधन



५०० स्थाई निवासी (मेरुदण्ड)।

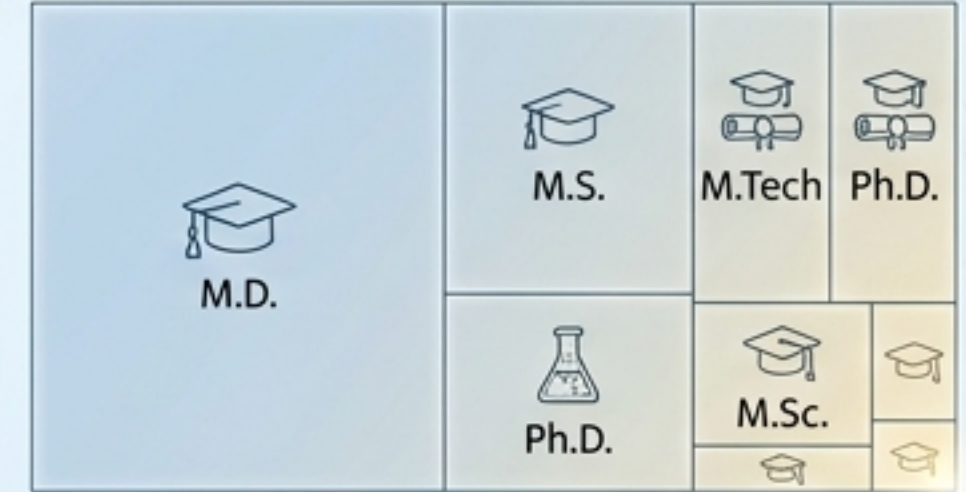
आर्थिक मॉडल



०% वेतन।

ऊँची नौकरियाँ त्यागकर 'सेल्फ-सस्टेनिंग' (स्व-पोषित) जीवन। कुछ कार्यकर्ता निजी जमा पूँजी से ही स्वयं का खर्च उठाते हैं।

शैक्षणिक योग्यता



M.D., M.S., M.Tech, Ph.D., M.Sc.
जैसी उच्च शिक्षा प्राप्त प्रतिभाएँ।

कथनी और करनी की एकता ही इस
विचारक्रान्ति को प्रामाणिक बनाती है।

ID Badge

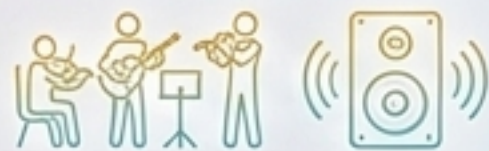


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदगुर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रज्ञा संस्थानों का राष्ट्रव्यापी ‘हब एंड स्पोक’ नेटवर्क



मोबाइल यूनिट्स: ५-सदस्यीय
मण्डलियाँ (१ वक्ता, ४ संगीतज्ञ)
निरन्तर भ्रमणशील।



वार्षिक कवरेज: १५००+
सम्मेलन और दीपयज्ञ प्रतिवर्ष।

केन्द्रीय हब:
शान्तिकुञ्ज



स्थाई शाखाएँ: पूरे भारत में
३००० से अधिक प्रज्ञा संस्थान।

व्यक्तिगत रूपांतरण का विज्ञान: सरल प्रवेश नियम

(१ दुष्प्रवृत्ति का त्याग)



(१ सत्प्रवृत्ति का ग्रहण)

= विचारक्रान्ति में प्रवेश

आयोजनों में सम्मिलित होने की एक ही दक्षिणा है।
इसी मनोवैज्ञानिक विज्ञान के आधार पर लाखों लोगों ने अपना कायाकल्प किया है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा
कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
घरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगद्धर्षि वेल्लुर्नि तणोनिष्ठ पण्डित श्रीलक्ष्मी शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

समयदान और अंशदान: स्व-पोषित आर्थिक स्वावलंबन

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच
में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे
कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य
के रूप में जन-जन तक पहुँचाने
का प्रयास करें।”

— पुज्य गुरुदेव युगविवेक वेदगुरु
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम भार्गव
(मापत्री परिवार के संस्थापक)

१ घण्टा समय (प्रतिदिन) + ५० पैसे अंशदान (प्रतिदिन) = राष्ट्रव्यापी महाभियान

बिना किसी सरकारी या कॉर्पोरेट फंड के, आम जनता के इस सूक्ष्म ‘अंशदान’
से ही स्थानीय सत्प्रवृत्ति सम्बर्धन का कार्य संचालित होता है।

समाज निर्माण में नारी और कुटीर उद्योग

गियर १: ५०% महिला नेतृत्व
- महिला जाग्रति का उद्घोष
और सक्रिय भागीदारी।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



गियर २: कुटीर उद्योग - घर में
अतिरिक्त आर्थिक स्वावलंबन
का प्रशिक्षण।

परिणाम: वानप्रस्थ परम्परा की वापसी (एक व्यक्ति को
समाज सेवा के लिए पूर्णकालिक मुक्त करना)।

इक्कीसवीं सदी का जन-आंदोलन: बिना माँगे जन-समर्थन

१. सन्त विनोबा भावे की कसौटी: 'संस्था तभी जीवित रहे, जब जनता बिना माँगे उसे स्वेच्छा से समर्थन दे।' शान्तिकुञ्ज इसी जन-मूल्यांकन पर आज तक खड़ा है।

२. महाकाल की प्रेरणा से जुड़ें। नव सृजन की आधारशिला रखने हेतु इस क्रान्तिधर्मी साहित्य को पढ़ें और जन-जन तक पहुँचाएँ।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में को पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)